दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य (वैकल्पिक विषय)

8 Test

टेस्ट-I (प्रश्नपत्र-1)

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

DTVF/19 (J-S)–M–HL1

Name: Devendra Prakash Meena **Mobile Number:** _____

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** _____

Center & Date: 21/06/19 **UPSC Roll No.** *(If allotted)*: _____

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में मुद्रित हैं।
परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।
प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।
जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर को गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशत: दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI & ENGLISH**.*
*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*
*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1							5						
2							6						
3							7						
4							8						
						सकल योग (Grand Total)							

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

या इस स्थान में प्रश्न
या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।

ease do not write
thing except the
stion number in
space)

Section–A

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) सिद्ध साहित्य में खड़ी बोली हिंदी का आरंभिक स्वरूप

सिद्धों द्वारा अपनी धार्मिक - साम्प्रदायिक मान्यताओं के प्रचार - प्रसार के लिए जिस साहित्य की रचना की गई, उसे सिद्ध साहित्य कहा जाता है।

सिद्ध साहित्य लेखन के दौर में अपभ्रंश से पुरानी हिन्दी का विकास हो रहा था। इसी क्रम में सिद्ध साहित्य में खड़ी बोली के आरंभिक स्वरूप से संबंधित कई तत्व शामिल है।

सिद्ध साहित्य में खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप निम्न उदाहरण से प्रकट होता है-

" पंडिअ सअल सत्थ बक्खाणअ,
देहहिं बुद्ध बसन्त ण जाणअ।"

उपर्युक्त उदाहरण में खड़ी बोली की विशेषताएं द्रष्टव्य है -

⇒ न के स्थान पर ण का प्रयोग।

⇒ अनुस्वार का आरंभिक प्रयोग खड़ी बोली की विशेषता है। जैसे - देहहिं

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।

(Please don't write
anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

इसके अतिरिक्त सिंह साहित्य में खड़ी बोली की शब्दावली जैसे - स दीवा, सत्य आदि का प्रयोग मिलता है।

सारांशत: कहा जा सकता है कि सिंह साहित्य में व्यापक स्तर पर खड़ी बोली का प्रयोग भले ही न मिले किन्तु अपभ्रंश से हिन्दी के विकास की प्रक्रिया के लक्षण प्राप्त होते है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

या इस स्थान में प्रश्न
या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।

ase do not write
thing except the
stion number in
space)

(ख) हिन्दी भाषा-क्षेत्र

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।

(Please don't write
anything in this space)

हिन्दी भाषा क्षेत्र से तात्पर्य ऐसे क्षेत्र से है, जहाँ हिन्दी का प्रयोग सामान्य बोलचाल, सम्पर्क भाषा एवं साहित्यिक स्तर पर होता है।

हिन्दी भाषा के प्रयोग की दृष्टि से हिन्दी भाषा क्षेत्र को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है-

(अ) ऐसे क्षेत्र जहाँ हिन्दी का प्रयोग प्रधान भाषा के रूप में किया जाता है। यहाँ हिन्दी सामान्य जीवन में प्रयुक्त होती है।

जैसे - उत्तर भारत के राजस्थान, उत्तर-प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार राज्य।

(ब) ऐसे क्षेत्र जहाँ हिन्दी प्रधान भाषा के रूप में प्रयुक्त नहीं होती किन्तु सम्पर्क भाषा के रूप में है। वस्तुतः इन क्षेत्रों की भाषाओं का विकास संस्कृत परम्परा से होने के कारण यहाँ हिन्दी आसानी से समझी जा सकती है।

जैसे- गुजरात, ओडिशा, असम, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र एवं दक्षिण भारतीय राज्य

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b)

ऐसे क्षेत्र जहाँ न तो हिन्दी प्रधान भाषा के रूप में प्रयुक्त होती है और न ही ~~सम~~ सम्पर्क भाषा के रूप में। ऐसे क्षेत्रों में हिन्दी केवल साहित्यिक स्तर पर पठन-पाठन में प्रयुक्त होती है।

उदाहरण के लिए विश्व के 120 राष्ट्रों में हिन्दी का पठन-पाठन साहित्यिक स्तर पर किया जाता है।

इसके अतिरिक्त विदेशी ~~स्कूलों~~ राष्ट्रों जैसे नेपाल, मालदीव, मॉरीशस आदि में भी हिन्दी प्रयुक्त होती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिंदी भाषा का मानकीकरण और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किसी भी भाषा के विकास के क्रम में उसका मानकीकृत होकर परिनिष्ठित रूप प्राप्त करना आवश्यक होता है। हिन्दी भाषा एक ऐसी ही परिनिष्ठित भाषा है।

महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' पत्रिका के प्रकाशन की बागडोर संभालते ही हिन्दी के मानकीकरण की दिशा में गंभीर प्रयास किये। उनके द्वारा किये गये प्रयास निम्न है-

(अ) विदेशी भाषाओं के जो शब्द हिन्दी में स्वीकार कर लिए गये है, उनका प्रयोग यथावत् किया जाना चाहिए।

(ब) संज्ञा के साथ प्रयुक्त परसर्ग को अलग करके लिखना चाहिए, जबकि सर्वनाम के साथ सटाकर लिखना चाहिए।

जैसे - राम ने
- तुमसे

(स) विदेशी भाषाओं के मूल। जो पुल्लिंग शब्द हिन्दी में स्त्रीलिंग की तरह प्रयुक्त होते

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

है, उन्हें उसी रूप में प्रयुक्त करना चाहिए।
जैसे - आत्मा, वायु, पाठशाला आदि।

(द) शब्दों के ~~द्विवी द्वित्व~~ गलत रूप की बजाय शुद्ध रूप का प्रयोग करना चाहिए।
जैसे - इस्ने > इसने
सक्ता > सकता

(य) सर्वनाम जैसे - मुझ, मोसे आदि का प्रयोग हिन्दी में नहीं किया जाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त आचार्य द्विवेदी जी ने हिन्दी व्याकरण के लिए कामताप्रसाद गुरु को नियुक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। फलस्वरूप हिन्दी का मानक स्वरूप सामने आया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

(घ) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में 'ब्रह्म समाज' का योगदान

स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने में अनेक व्यक्तियों, संगठनों का योगदान है। जिनमें ब्रह्म समाज का योगदान सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है।

सामाजिक-धार्मिक सुधार आन्दोलन के क्रम में ईसाईकरण की नीति के प्रचार को रोकने तथा आम जनता तक सुधारों की बात पहुँचाने के लिए हिन्दी सर्वाधिक श्रेष्ठ विकल्प था। अतः ब्रह्म समाज ने हिन्दी को ही प्रचार-प्रसार की भाषा के रूप में चुना।

ब्रह्म समाज के अध्यक्ष केशवचन्द्र सेन ने अपने निबंध 'भारतवर्ष में एकता कैसे हो' में लिखा है कि-

"उपाय यह है कि केवल एक भाषा व्यवहार में हो, और हिन्दी इसके लिए सर्वश्रेष्ठ विकल्प है।"

केशवचन्द्र सेन ने ब्रह्म समाज की प्रार्थनाओं में हिन्दी के प्रचार-प्रसार पर

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

बल दिया। ब्रह्म समाज के अनुयायी ग्रामीण क्षेत्रों में समाज सुधार संबंधी प्रयत्नों को हिन्दी भाषा में पहुँचाया करते थे।

केशवचन्द्र सेन की सलाह से आर्य समाज के संस्थापक दयानन्द सरस्वती ने हिन्दी को आर्य भाषा के रूप में प्रचारित करना आरंभ किया।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि ब्रह्म समाज ने जनता तक हिन्दी के प्रचार-प्रसार को सुदृढ़ किया और राष्ट्रभाषा के रूप में मजबूत आधार प्रदान किया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) 'हरियाणवी बोली'

हरियाणवी, पश्चिमी हिन्दी उपभाषा वर्ग की एक प्रमुख बोली है जिसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से माना जाता है तथा प्रसार क्षेत्र हरियाणा, दिल्ली तथा पश्चिमी उत्तरप्रदेश तक है।

हरियाणवी बोली की विशेषताएँ

(अ) ध्वनि संबंधी विशेषताएँ

→ ड़ के स्थान पर ड, ल के स्थान पर ळ तथा र का ड़ उच्चारण इस बोली की विशेषता है।

जैसे - खड़ा > खडा
बालक > बाळक

→ इस बोली में महाप्राण शब्दों के अल्पप्राणीकरण की विशेषता पाई जाती है।

जैसे - हाथ > हात

→ ऐ तथा औ का उच्चारण ए तथा ओ के रूप में होता है।

जैसे - और > ओर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ब) व्याकरण संबंधी विशेषताएँ

→ कारक व्यवस्था

कर्ता - ने, नै		सम्प्रदान - के लिए
कर्म - को		संबंध - रा, रे, का, के
करण - से		

→ स्त्रीलिंग शब्द प्रायः इकारान्त / ईकारान्त होते हैं।

जैसे - मोरनी
- बाघिन
- नदी

(स) शब्द भंडार

इस बोली में अधिकांश शब्द तद्भव हैं, उसके पश्चात् तत्सम, देशज एवं विदेशी शब्द आते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

या इस स्थान में प्रश्न
या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।

ease do not write
thing except the
stion number in
space)

2. (क) देवनागरी लिपि को वैज्ञानिक लिपि का दर्जा दिलाने वाली विशेषताओं का उद्घाटन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।

(Please don't write
anything in this space)

किसी भी भाषा का मानकीकरण ही उसे वैज्ञानिकता प्रदान करता है। हिन्द देवनागरी लिपि की निम्न विशेषताएँ उसे वैज्ञानिक लिपि के रूप में स्थापित्र करती है -

(अ) संस्कृत भाषा की भाँति, हिन्दी की देवनागरी लिपि में भी वर्णों का स्थान उनके उच्चारण के स्था स्थान के साथ निर्धारित्र है तथा एक ही वर्ग में रखे गये है।

जैसे - कंठ - क, ख, ग, घ

दंत्र - त, थ, द, ध

इसके साथ ही स्वरों को आरंभ में स्थान देना भी एक वैज्ञानिकता ही है क्योंकि स्वरों का उच्चारण में हवा सीधे कंठ से बाहर निकलती है।

(ब) देवनागरी की एक विशेषता यह है कि इसके लिखित रूप तथा उच्चरित्र रूप में कोई अन्तर नहीं होता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उदाहरण - रोमन लिपि में 'U' का उच्चारण ओ(oo) तथा उ (u) दोनों से होता है, जबकि देवनागरी में ऐसी द्विरूपता नहीं है।

(स) देवनागरी की मात्रा व्यवस्था भी इसकी वैज्ञानिकता को दर्शाती है। वस्तुतः रोमन लिपि की भाँति स्वरों को अलग-अलग लिखने की बजाए स्वरों को मात्रा के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।

जैसे- AMERICA — अमेरिका

(द) देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता इसके सीखने की सरलता में भी है। इस लिपि को सीखने के लिए केवल खड़ी पाई (।), आड़ी पाई (–) तथा अर्द्धचन्द्र (u) का प्रयोग किया जाता है।

(य) देवनागरी लिपि की शिरोरेखा भी इसकी एक वैज्ञानिक विशेषता है। इससे वाक्य विन्यास सही बना रहता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जैसे - कपड़ा सूख रहा है। ✓

कप डासूख र हा है ×

(ख) संयुक्त वर्णों के लिए अलग ध्वनि चिह्न भी इसकी एक वैज्ञानिकता है।

जैसे - क्ष, त्र, ज्ञ, श्र

(ग) प्रत्येक ध्वनि के लिए अलग चिह्न तथा अन्य लिपियों के चिह्नों का स्वीकरण इसकी वैज्ञानिकता को सुदृढ़ करता है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि देवनागरी लिपि एक वैज्ञानिक लिपि है और निरन्तर इसमें सुधार द्वारा अखिल भारतीय लिपि बनने की ओर अग्रसर है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

ृपया इस स्थान में प्रश्न
ख्या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।
ease do not write
ything except the
estion number in
s space)

(ख) 'बुन्देली' बोली का परिचय दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बुन्देली बोली पूर्वी हिन्दी उपभाषा वर्ग की एक प्रमुख बोली है। पूर्वी हिन्दी का विकास अर्द्धमागधी अपभ्रंश से माना जाता है।

पूर्वी हिन्दी उपभाषा की प्रमुख बोलियाँ निम्नलिखित है -

(अ) अवधी

(ब) बुन्दे

(स)

'बुन्देली बोली' पश्चिमी हिन्दी की प्रमुख बोली है, जिसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से माना जाता है।

यह बोली मुख्यत: बुन्देलखंड क्षेत्र तथा मध्यप्रदेश के छतरपुर जिले में बोली जाती है। इस बोली की अधिकांश विशेषताएँ इसे ~~ब्रजभाषा~~ कन्नौजी के निकट स्थापित करती है।

बुन्देलखंडी की विशेषताएं निम्नलिखित है -

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(क) ध्वनिसंबंधी विशेषता :-

यह आकारान्त तथा ओकारान्तता से युक्त होती है।

जैसे - उठो

- पत्ता

→ ऐ तथा औ के स्थान पर ए तथा ओ का प्रयोग किया जाता है।

→ महाप्राणीकरण की प्रवृत्ति पाई जाती है। जैसे- पढ़ना > फढ़ना

(ख) व्याकरणिक विशेषताएँ

→ सर्वनाम के रूप में मेरा, हमार, तुसे, हमार हमको आदि का प्रयोग किया जाता है।

→ क्रिया के लिए वर्तमान काल में 'त' रूप प्रचलित है। जैसे- करत

खेलत

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) मानक हिंदी की 'विशेषण-व्यवस्था' पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किसी भी भाषा के मानकीकरण के लिए उसका व्याकरणिक ढाँचे में ढला होना आवश्यक है। मानक हिन्दी पूर्णत: व्याकरणिक ढाँचे में ढली हुई है।

~~हिन्दी की व्याकरण व्यवस्था में विशेषण प्रमुख है। हिन्दी~~ .

संज्ञा तथा सर्वनाम की विशेषता बताने वाले पद को विशेषण कहा जाता है।

जैसे - राम अच्छा लड़का है।

हिन्दी में चार प्रकार के विशेषण माने गये है -

(क) गुणवाचक विशेषण :- वे विशेषण जो किसी संज्ञा ~~की विश~~ के गुण प्रदर्शित करते है, गुणवाचक विशेषण कहलाते है। गुण से तात्पर्य केवल अच्छाई से न होकर दोनो अच्छाई / बुराई है।

जैसे - काला वस्त्र

लंबा लड़का

Copyright – Drishti The Vision Foundation

या इस स्थान में प्रश्न
या के अतिरिक्त कुछ
लखें।

ase do not write
thing except the
stion number in
space)

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।

(Please don't write
anything in this space)

सार्वनामिक विशेषण :- वे विशेषण जो अपने सर्वनाम रूप में ही संज्ञा की विशेषता बताते है। सार्वनामिक विशेषण कहलाते है।

जैसे - कितने लंबे हो तुम।

यह विशेषण चार प्रकार का होता है -

(अ) प्रश्न वाचक सर्वनामिक विशेषण → 'कौनसी किताब'

(ब) निश्चय वाचक सार्वनामिक विशेषण → 'यह किताब'

(स) अनिश्चयवाचक सार्वनामिक विशेषण → 'कोई किताब'

(द) संबंध वाचक सार्वनामिक विशेषण → 'वही किताब'

(ग) परिणामबोधक विशेषण :- यह विशेषण द्रव्यवाचक संज्ञा के संदर्भ में प्रयुक्त होता है।

जैसे - थोड़ा पानी

(घ) संख्यावाची विशेषण :- यह विशेषण जातिवाचक संज्ञा के संदर्भ में प्रयुक्त होता है।

जैसे - बीस राक्षस।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विकार के आधार पर आरंभिक दोनो विशेषण विकारी तथा अंतिम दोनो विशेषण अविकारी है।

जैसे - काला > काली

कितना > कितनी

बीस लड़के > बीस लड़कियाँ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

ा इस स्थान में प्रश्न
ा के अतिरिक्त कुछ
खें।

ase do not write
hing except the
tion number in
space)

3. (क) हिंदी साहित्य के विकास में अपभ्रंश के योगदान पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।

(Please don't write
anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) मध्यकाल में ब्रजभाषा के साहित्यिक विकास पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

ब्रजभाषा . पश्चिमी हिन्दी उपभाषा वर्ग की प्रमुख बोली है, जिसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से माना जाता है।

ब्रजभाषा के आरंभिक प्रयोग के उदाहरण अमीर खुसरो के काव्य में विद्यमान हैं। जैसे- मेरा मोसे सिंगार करावत।

मध्यकाल में साहित्यिक भाषा के रूप में विकास सूरदास द्वारा किया गया। सूरदास के द्वारा प्रयुक्त ब्रजभाषा अपने आरंभिक रूप में ही परिपक्व नजर आती है। इसी संदर्भ में शुक्ल जी ने भी कहा है-

"सूर की भाषा पहले से चली आ रही किसी परम्परा का पूर्ण विकास जान पड़ती है।××× भले ही वह मौखिक रूप में विद्यमान रही हो।"

सूरदास ने अपनी भाषिक क्षमताओं का प्रयोग करते हुये अकेले दम पर ब्रजभाषा को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

साहित्य की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया।

सूरदास की भाषा की प्रमुख विशेषताएँ उसकी बिम्बात्मकता एवं वाग्विदग्धता है। इन्हीं विशेषताओं के साथ ब्रजभाषा का माधुर्य मिश्रित होकर उसे अखिल भारतीय भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

सूरदास की बिम्ब क्षमता जीवन्तता से युक्त है। द्रष्टव्य है -

"सोभित कर नवनीत लिये,
घुटरूनि चलत, रेनु तन मंडित
मुख दधि लेप किये।"

सूर की भाषा की सर्वश्रेष्ठ विशेषता उसकी वाग्विदग्धता है। सूर ने गोपियों के माध्यम से इसका माधुर्य रूप प्रकट किया है -

"निर्गुन कौन देस को बासी।
को है जनक, जननी को कहियत
कौन नारि को दासि।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

सूर के हाथ पड़कर परिपक्व हुई ब्रज-भाषा शृंगार के लिए विशेषीकृत बन गई।

इसी विशेषता ने रीतिकाल में मुक्तक परम्परा में ब्रजभाषा को काव्यभाषा के रूप में स्थापित किया।

रीतिकाल में बिहारीलाल जी ने भाषा की समास क्षमता एवं भावों की समाहार क्षमता का प्रयोग करते हुये बिहारी दोहे लिखे। जिनकी प्रशंसा जार्ज ग्रियर्सन ने की।

" कहत, नटत, रीझत, खिजत,
मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन में करत है,
नैननु ही सौं बात।"

रीतिकाल की एक अन्य काव्यधारा में घनानन्द ने शृंगार की क्षमता को हृदय से जोड़ा उन्होंने संवेदनामूलक प्रेम को ब्रजभाषा के रूप में प्रकट किया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

जैसे -

"उजरनि बसी है, हमारी अखियानी देखो।"

इस प्रकार अमीर खुसरो से आरंभ होकर सूरदास के हाथों परिपक्व हुई ब्रजभाषा मध्यकाल में साहित्यिक भाषा के रूप में व्यापक तौर पर प्रयुक्त हुई।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'भोजपुरी' बोली के उत्पत्ति-स्रोत, विस्तार-क्षेत्र और व्याकरणिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

भोजपुरी बोली बिहारी हिन्दी उपभाषा की प्रमुख बोली है, जिसका विकास मागधी अपभ्रंश से हुआ है।

भोजपुरी भारत की प्रमुख रूप से बोली जाने वाली भाषा है। इसका विस्तार क्षेत्र पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार तथा * उत्तरी झारखंड तक विस्तृत है।

यह बोली भारत के बाहर भी काफी अधिक मात्रा में बोली जाती है। वस्तुतः ब्रिटिश काल में बाहर गये गिरमिटिया मजदूरों की बोली के रूप में यह आज भी मारीशस, त्रिनिनाद एंड टोबगो, फिजी आदि राष्ट्रों में बोली जाती है।

ध्वनि संबंधी विशेषताएँ

→ इस बोली में 'ण' का प्रयोग नहीं होता है।

→ ड > र, व > ब तथा स, श > ह का प्रयोग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किया जाता है।

जैसे - वन > बन

साड़ी > सारी

→ 'ऐ' तथा 'औ' का प्रयोग संध्यक्षरों 'अइ' तथा 'अउ' के रूप में किया जाता है।

जैसे - पैसा > पइसा

व्याकरणिक विशेषताएँ

→ संज्ञा के तीन रूप पाये जाते हैं।

उदाहरण - घोड़ा, घोरवा, घोरउना

→ स्त्रीलिंग शब्द प्राय: इकारान्त / ईकारान्त होते हैं। जैसे -

लड़का > लड़की

सेठ > सेठानी

→ सर्वनाम

प्रथम पुरुष - म्हार, हमार, मोर

मध्यम पुरुष - तुहार, तोर,

अन्य पुरुष - जिन्ह, उन्ह, जे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

कारक चिन्ह -

कर्ता - ने	सम्प्रदान - के लिए
कर्म - को,	संबंध - का, के, की
करण - से, सँ	

→ क्रिया - क्रिया के तीन रूप प्रचलित है।

वर्तमान काल → 'त' रूप → करत

भूतकाल → 'ल' रूप → देखल

भविष्यकाल → 'ब' रूप → खाइब

→ बहुवचन बनाने के लिए 'अन', 'न्हि', जन, लोगन का प्रयोग किया जाता है।

जैसे - हाथ > हाथन

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) श्री कामताप्रसाद गुरु के हिंदी व्याकरण-लेखन की विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किसी भाषा के मानकीकरण के लिए उसका व्याकरणिक ढाँचे पर दृढ़ होना आवश्यक है। यह उसे वैज्ञानिकता प्रदान करता है।

बीसवीं सदी के आरंभ में जब गद्य की भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग बढ़ रहा था, तब सरस्वती पत्रिका के संपादक 'महावीर प्रसाद द्विवेदी ने कामताप्रसाद गुरू से मिलकर हिन्दी के व्याकरण के संबंध में परामर्श किया।

कामताप्रसाद गुरु ने तब हिन्दी का व्याकरण लेखन प्रारंभ किया जिसकी विशेषताएं निम्न है -

(अ) कामताप्रसाद गुरू ने नये नियम बनाने के स्थान पर लोकप्रचलित नियमों को ही परिमार्जित किया।

(ब) उन्होंने अरबी-फारसी शब्दों के लिए शिवप्रसाद सितारे हिन्द का 'हिन्दी व्याकरण', शैली के लिए दामले का मराठी व्याकरण तथा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ग्लाट्स के 'हिन्दी ग्रामर' का उपयोग किया। उनके द्वारा सरलीकृत नियमों का प्रयोग किये जाने से पहली बार हिन्दी का शिक्षण संभव हो सका।

(ह) कामताप्रसाद गुरु ने दैनिक जीवन के उदाहरणों के प्रयोग से इसे अधिक लोक मान्यता प्रदान की।

कालान्तर में किशोरीदास वाजपेयी के नेतृत्व में हिन्दी का व्याकरण पुनः लिखा गया किन्तु उन्होंने भी कामताप्रसाद गुरु को श्रेय प्रदान किया।

इस प्रकार स्पष्ट है कि हिन्दी का प्रथम स्वीकृत एवं सरलीकृत व्याकरण बनाने के लिए कामताप्रसाद गुरु का योगदान अविस्मरणीय है। इसी व्याकरण ने दक्षिण भारत में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में भूमिका निभाई।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) अमीर खुसरो के साहित्य में खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप

अमीर खुसरो आदिकाल के प्रमुख कवि है। उन्हे खड़ी बोली तथा उर्दू का पहला कवि माना जाता है।

खुसरो के साहित्य में खड़ी बोली का प्रयोग बेहद सधा हुआ है। उन्होंने खड़ी बोली का जो रूप प्रयुक्त किया है, वह ~~अस~~ वर्तमान खड़ी बोली के सदृश है। इस समरूपता को देखकर आचार्य शुक्ल जी को भी अमीर खुसरो की तारीफ करनी पड़ी।

<u>उदाहरण</u> -

" एक थाल मोती से भरा,
सबके सिर औंधा धरा।
चारो ओर वह थाल फिरे,
मोती उससे एक न गिरे।"

उपर्युक्त उदाहरण में न केवल व्याकरणिक संरचना बल्कि शब्द भी ~~आरंभिक~~ वर्तमान खड़ी बोली के समान है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खुसरो ने अपनी बहुमुखी प्रतिभा का प्रयोग करते हुये खड़ी बोली हिन्दी का ब्रज भाषा के साथ सुन्दर मिश्रण किया है, जो उनकी भाषिक क्षमता को दर्शाता है।

उदाहरण -

"मेरा मोसे सिंगार करावत,
आगे बैठ के मान बढ़ावत।
वासे चिक्कन ना कोउ दीसा,
ए सखि साजन, ना सखि सीसा।"

उक्त उदाहरण में मोसे, दीसा, वासे आदि शब्दों का खड़ी बोली के साथ सुन्दर प्रयोग हुआ है।

सारांशतः कह सकते है कि अमीर खुसरों की भाषिक क्षमताओं की उच्च कोटि की पकड़ ने खड़ी बोली को परिपक्व रूप में प्रयोग किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) संत-साहित्य में खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप

भक्तिकाल में अनेक संत कवि हुये, जिन्होंने एक स्थान पर रुककर काव्य की बजाय घुमक्कड़ प्रवृत्ति को अपनाया। फलस्वरूप उनकी भाषा पंचमेल खिचड़ी हो गई।

पंचमेल खिचड़ी के एक अवयव के रूप में खड़ी बोली उपस्थित थी। अतः संत साहित्य में खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है।

कबीर दास के काव्य में खड़ी बोली का सर्वाधिक व्यापक एवं सफल प्रयोग हुआ है। उदाहरण के लिए -

"बकरी पाती खाती है
ताकि काढ़ी खाल,
जे नर बकरी खात है,
तिन का कौन हवाल।"

कबीर के पश्चात रीतिकाल में खड़ी बोली का प्रयोग व्यापक स्तर पर होने लगा। इस समय कई कवियों ने ब्रज भाषा की बजाय खड़ी बोली में कविताएँ की। जिसमें

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मलूकदास का यह दोहा प्रमुख है -

"अजगर करै न चाकरी,
पंछी करै न काम।
दास मलूका कह गये,
सबके दाता राम।"

उपर्युक्त उदाहरण में शब्दावली के स्तर पर परिपक्व खड़ी बोली का प्रयोग दिखाई देता है।

जैसे - अजगर, काम आदि।

स्पष्ट है कि संत साहित्य में खड़ी बोली अपने आरंभिक के रूप के साथ कहीं-कहीं परिपक्वता के साथ नजर आती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright - Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'कुमाऊँनी' बोली

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कुमाऊँनी बोली पहाड़ी हिन्दी उपभाषा वर्ग की प्रमुख बोली है। पहाड़ी हिन्दी का विकास अनार्य भाषाओं से हुआ किन्तु कालान्तर में इसमें ब्रजभाषा तथा राजस्थानी के तत्व सम्मिलित हो गये।

कुमाऊँनी बोली :-

यह कुमाऊँ हिमालयी क्षेत्र में बोली जाती है। इस बोली पर राजस्थानी का प्रभाव अधिक मात्रा में पड़ा है। इसकी विशेषताएँ निम्नलिखित है -

→ राजस्थानी के ~~प्रयोग~~ स प्रभाव से ओकारान्तता अधिक विद्यमान है।
जैसे - तारो, हुक्को आदि।

→ बहुवचन बनाने के लिए ऊँ का प्रयोग किया जाता है।
जैसे - घोड़ा > घोड़ूँ

→ कारक चिह्नों में कर्ता कारक के लिए 'ले' कर्म कारक के लिए कणि / कुणि तथा करण

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कारक के लिए 'थे, ते' आदि का प्रयोग किया जाता है।

इस बोली की भाषिक ~~…~~ विन्यास को निम्न उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है-

" बरसा लागि बरसणा,
ठंडु ए दा जोर,
धुक-धुक छुटै कम्मणी
कि करघा कमजोर।"

उक्त उदाहरण में छुटै, का प्रयोग तथा न के स्थान पर ण का प्रयोग राजस्थानी का प्रभाव है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) भाषा और बोली में अंतर

किसी भी भाषा का विकास बोली से ही होता है। बोली का विकसित एवं परिनिष्ठित रूप ही भाषा है।

बोली	भाषा
→ यह केवल किसी क्षेत्र विशेष में प्रयुक्त होती है।	→ इसका क्षेत्र विस्तृत होता है।
→ यह मुख्यत: अमानक होती है।	→ यह व्याकरणिक ढाँचे में ढलकर मानक रूप धारण करती है।
→ यह शिक्षण तथा शोध कार्यों में प्रयुक्त नहीं होती।	→ यह शिक्षण एवं शोध कार्यों में प्रयुक्त होती है।
→ बोली सीमित रूप में लिखित किन्तु व्यापक रूप में बोलचाल के लिए प्रयुक्त होती है।	→ जबकि भाषा लिखित तथा बोलचाल दोनो ही रूप में प्रयुक्त होती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

	कभी-कभी बोली का प्रयुक्त समाप्त होने के बाद भी भाषा के रूप में यह प्रयुक्त होती है।	
→	कोई भी बोली विकसित होकर भाषा बन सकती है। जैसे- ब्रजभाषा, मध्यकाल में।	→ कोई भी भाषा पुनः सीमित होकर बोली रूप धारण कर सकती है जैसे - ब्रजभाषा आधुनिक काल में

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this spa

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

Please do not write anything except the question number in this space)

(ड़) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में पुरुषोत्तमदास टंडन का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में जिन व्यक्तियों का सर्वाधिक योगदान है, उनमें राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

पुरुषोत्तमदास टंडन ने स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए अथक मेहनत की। उन्होंने हिन्दी के प्रचार के लिए काशी नागरी प्रचारिणी सभा के तत्वाधान में हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना की।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष के रूप में टंडन जी ने हिन्दी को न्यायालय की भाषा के रूप में प्रयुक्त किये जाने का समर्थन किया। उनके द्वारा स्थापित्र हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रतिवर्ष हजारो युवाओं को हिन्दी के सिखाने का कार्य करता है।

पुरुषोत्तमदास टंडन ने, सेठ गोविन्द दास की भाँति हिन्दी को व्यवहार में प्रयुक्त करने की वकालत की। उन्होंने कहा कि

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हिन्दी का प्रयोग ही हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करेगा। उन्होंने उत्तर प्रदेश तथा अन्य हिन्दी भाषी राज्यों में घूम-घूम कर हिन्दी का प्रचार किया।

राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी की प्रशंसा करते हुये वे कहते हैं कि -

"मैं हिन्दी के प्रचार, राष्ट्रभाषा के प्रचार को राष्ट्रीयता का एक अंग मानता हूँ। यह भाषा ऐसी होनी चाहिए जिसमें हम अपने विचार स्पष्टतापूर्वक प्रकट कर सके।"

निष्कर्षतः हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रसारित करने में पुरुषोत्तमदास टंडन का योगदान अविस्मरणीय है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) देवनागरी लिपि की सीमाओं का निरूपण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) 'राजस्थानी हिन्दी' पर प्रकाश डालिये। 20

'राजस्थानी हिन्दी' हिन्दी की प्रमुख उपभाषा वर्ग है जिसका विकास मध्यदेशीय अपभ्रंश तथा डिंगल भाषा से हुआ है।

हिन्दी की प्रमुख बोलियाँ निम्न है -

(अ) मारवाड़ी
(ब) ढूँढाड़ी (जयपुरी)
(स) मालवी
(द) मेवाती

राजस्थानी हिन्दी एक 'ट' वर्ग बहुला तथा ओकारान्त उपभाषा है। इसमें ल के स्थान पर ळ का प्रयोग मिलता है।

(अ) मारवाड़ी बोली :- यह राजस्थानी हिन्दी की सर्वाधिक विकसित बोली है, जिसका प्रसार क्षेत्र अधिक विस्तृत है।

ध्वनिसंबंधी विशेषताओं में ~~राजस्थानी~~ मारवाड़ी बोली में न के स्थान पर ण, ल के स्थान पर ळ का प्रमुख है। यह एक ओकारान्त बोली है। जैसे - हुवको, तारो आदि।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बहुवचन बनाने के लिए इस बोली में 'आँ' का प्रयोग किया जाता है।

जैसे - बात > बाताँ
रात > राताँ

सर्वनाम - सर्वनाम के रूप में म्हारो, थारो, मोकू, थाँको आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

मारवाड़ी का उदाहरण -

" हे री मैं तो दरद दीवाणी,
म्हारो दरद न जाणे कोय।"

(ब) ढूंढाड़ी / जयपुरी :- यह राजस्थानी हिन्दी की दूसरी प्रमुख बोली है, जो जयपुर, अजमेर, दौसा आदि जिलों में बोली जाती है।

इस बोली की प्रमुख विशेषता सहायक क्रिया के रूप में 'छा' का प्रयोग है। साथ ही, न का ण ~~उच्चा~~ उच्चारण किया जाता है। यह 'ट' वर्ग बहुला बोली है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

~~राजस्थानी हिन्दी का~~

ढूंढाड़ी का उदाहरण

" म्हारी घूमर छे नखराळी ए मा
घूमर रमवा म्हे ज्यास्या।"

(स) मालवी - यह मालवा क्षेत्र तथा मध्यप्रदेश के कुछ भागों मे बोली जाती है। इसकी प्रमुख विशेषता दीर्घीकरण की प्रवृत्ति है।

उदाहरण - लकडी > लाकडी

(द) मेवाती - यह हरियाणा के मेवात से संलग्न क्षेत्र में बोली जाती है। इसमें अल्प मात्रा में हरियाणवी पुट दिखाई पड़ता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि राजस्थानी हिन्दी हिन्दी की एक प्रमुख उपभाषा है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'अवधी' बोली का परिचय दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'अवधी' बोली, पूर्वी हिन्दी की एक प्रमुख बोली है, जिसका विकास अर्द्धमागधी अपभ्रंश से माना जाता है।

यह मुख्यतः अवध क्षेत्र, फैजाबाद आदि स्थानों पर बोली जाती है। इसका आरंभिक प्रयोग अमीर खुसरो के खालिकबारी में दिखाई पड़ता है।

मध्यकाल में सूफी काव्यधारा एवं रामभक्ति-काव्यधारा में यह साहित्यिक भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हुई।

सूफीकाव्यधारा में कुतुबन (मृगावती), मुल्ला दाउद (चन्दायन) तथा जायसी (पद्मावत) इसके प्रमुख कवि हैं। जायसी ने ठेठ अवधी के माधुर्य को साहित्य का हिस्सा बनाया।

जैसे - नैन पूवहि जस महवट नीरू

~~जायसी की भाषा का माधुर्य~~

रामभक्ति काव्यधारा में तुलसीदास जी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

ने संस्कृत को अवधी के साथ समाहित किया और ~~ब~~ अवधी को नवीन आयाम प्रदान किया। जिसकी प्रशंसा आचार्य शुक्ल ने भी की थी।

उदाहरण → "लोचनु जल रहे लोचन कोना।
जैसे परम कृपण कर सोना।"

अवधी की विशेषताएँ

(क) ध्वनि संबंधी विशेषताएँ

→ ड़ > र, व > ब तथा ण > न का प्रयोग

जैसे - साड़ी > सारी
वन > बन

→ यह उकारान्त बोली है। जैसे - रामु . लोचनु

→ ऐ तथा औ का प्रयोग 'अइ' तथा 'अउ' के रूप में।

जैसे - पैसा > पइसा

(ख) व्याकरणिक विशेषताएँ

→ संज्ञा के तीन रूप पाये जाते हैं।

जैसे - लरिका , लरिकवा , लरिकउना

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। →

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

सर्वनाम -

प्रथम पुरुष - मोसे, मोर, हमार

मध्यम पुरुष - तोसे, तोर

अन्य पुरुष - ओकर, जिन्ह

→ स्त्रीलिंग बनाने के लिए ईकारान्त। ऊकारान्त का प्रयोग किया जाता है।

जैसे - मोर > मोरनी

→ क्रिया के रूप भोजपुरी की भांति 'त' (वर्तमान) 'ब' (भविष्यकाल) तथा 'ल' (भूतकाल) मिलते है।

→ कारक चिन्ह -

कर्ता	- x	सम्प्रदान	- केहि लागि
कर्म	- को, कुं	संबंध	- को, का, के, रा, री
करण	- से, संती		

(ग) शब्दभंडार - अवधी का मूल शब्द भंडार मूलतः तद्भव से युक्त है। इसके पश्चात् तत्सम, देशज, विदेशी शब्द आते है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) रहीम के साहित्य में खड़ी बोली के आरंभिक स्वरूप पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रहीम मध्यकाल के प्रमुख कवि है, जिन्होंने दरबार में रहते हुये कृष्णभक्ति काव्य का लेखन किया। उनके काव्य में खड़ी बोली का आरंभिक रूप 'मदनाष्टक' में दिखाई देता है।

रहीम के काव्य में खड़ी बोली का प्रयोग आरंभिक रूप में तो विद्यमान है ही कहीं-कहीं यह परिपक्वता के स्तर पर भी दिखाई देता है।

उदाहरण -

"रहिमन पानी राखिए,
बिन पानी सब सून।
पानी बिनु न उबरे
मोती, मानस, चून।"

उक्त उदाहरण में शब्दावली के स्तर पर पानी, सब, आदि शब्द आरंभिक खड़ी बोली को प्रदर्शित करते है।

रहीम के काव्य में खड़ी बोली का प्रयोग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

कहीं-कहीं ब्रजभाषा के साथ मिश्रित रूप में भी दिखाई देता है। जो अमीर खुसरो के समान उनकी भाषिक क्षमता को प्रदर्शित करता है।

उदाहरण - "रहिमन ओछे नरन सो,
बैर भली न प्रीत,
काटे-चाटे श्वान के,
दुहूँ भाँति विपरीत।"

इस उदाहरण में ओछे, बैर, काटे आदि शब्द खड़ी बोली को प्रदर्शित करते हैं, वहीं नरन, दुहूँ आदि ब्रजभाषा के उदाहरण है।

रहीम पहले ऐसे कवि हैं, जिन्होंने खड़ी बोली को मार्मिकता एवं संवेदना से युक्त किया। वे संवेदना को प्रकट करते हुये हृदय की गहराई तक पहुँचते है।

उदाहरण - "रहिमन धागा प्रेम का
मत तोड़ो छिटकाय,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

टूटे से फिर जुड़े नहीं।
जुड़े गाँठ पड़ जाय।"

उपर्युक्त उदाहरण रहीम की खड़ी बोली की परिपक्वता का स्तर है। जहां आधुनिक खड़ी बोली के सदृश प्रयुक्त हुई है।

निष्कर्षतः रहीम का काव्य खड़ी बोली का आरंभिक स्वरूप तथा परिपक्व स्वरूप दोनों को प्रदर्शित करता है। ~~वह~~ भले ही परिपक्वता का स्तर कम ही हो।

Copyright – Drishti The Vision Foundation